SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

भारतीय शास्त्रीय संगीत में मैहर घराने का योगदान

KM. PRAGYA SINGH

Research Scholar, Department of Instrumental Music, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

सार

घराना शब्द की उत्पत्ति गृह अर्थात् घर से माना गया है ।जिस प्रकार घर परिवार अथवा वंश परंपरा में नियम ,कायदे ,मर्यादा, अनुशासन की सीमाएं होती हैं उसी प्रकार संगीत में भी नियम, कायदे, मर्यादा, अनुशासन की कठोरता से पालन किया जाता है । मैहर घराना जो कि अपने संगीत के लिए उत्कृष्ट घराना माना जाता है। मैहर घराना अपने वादन शैली से परिपूर्ण एवं भारत रत्न कलाकारों एवं विभिन्न प्रकार के विभूषण, पद्म विभूषण ,पद्मश्री से अलंकृत कलाकारों का एक प्रतिभाशाली घराना है, इसके संस्थापक बाबा अलाउद्दीन ख़ां साहब जिनके द्वारा अनेको नवीन वाध- नल तरंग ,चंद्र सारंग, सारंगी ,सितार बैंजो ,वायलिन, सितार ,सितार बैंजो, गिटार ,सुरबहार ,सरोद , बांसुरी, इत्यादि वाद्य का निर्माणक माना जाता है। अनेक रागों की रचना बाबा एवं उनके शिष्य गणों द्वारा किया गया, जो अतुलनीय सराहनीय है जिनका आज वर्तमान में अनुसरण किया जा रहा है इस घराने का प्रचार प्रसार आज भी इस घराने के शिष्य करें कर रहे हैं।

***सूचक शब्द:-**, मैहर घरान, मैहर घराने के कलाकार, वृन्दवादन*

भूमिका

घराना शब्द के संदर्भ में जानकारी मिलती है कि घराना शब्द संस्कृत के गृह शब्द से प्रेरित है। जैसे-"The world ghrana is derived from ghara(house, from the Sanskrit noun;grha)In Hindu and Urdu,ghrarana is a there fore noun denoting those who live under the same roof,therefore a family,lineage,aclan.the first significance of the term is thus derived from heredity,or ties of kinship.[1]"

घराना या कुल दो प्रकार से चलता है। एक जन्म से दूसरा विद्या से। जैसे एक वश में जन्म लेने वाले सभी व्यक्ति का विशिष्ट परिवार होता है। वैसे ही पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही विशिष्ट गुरु -शिष्य परंपरा से विद्या पाने वाले सभी शिक्षार्थियों का भी एक परिवार होता है, जिसे "घराना" कहते हैं। अर्थात इसे गुरु- शिष्य परंपरा द्वारा विकसित घराना भी कह सकते हैं।"[2] घराने के अतिरिक्त कहीं-कहीं बाज शब्द मिलता है ,इसका अर्थ शैली तरीका ठंग होता है। प्रत्येक घराने की अपनी पृथक पृथक शैली अथवा बाज होती है। जिसके माध्यम से उस घराने को विशिष्ट पहचान मिलता है । घराने का नामकरण किसी विशेष स्थान अथवा विशिष्ट शैली को प्रस्तुत करने वाले संगीतज्ञ के नाम के आधार पर होता है जैसे :-आगरा,मैहर, ग्वालियर,बनारस ,लखनऊ, पंजाब आदि शहरों के नाम से अलग-अलग संगीत विधाओं के घराने स्थापित है।

भारतीय संगीत अत्यधिक प्राचीनतम संगीत हैं। जहां पर प्रारंभ से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली चली आ रही है। वर्तमान में यही गुरुकुल शिक्षा प्रणाली घराना के नाम से प्रचलित हो गया, जैसे:-आगरा, ग्वालियर, सेनिया, रामपुर सहसवान, इंदौर ,इत्यादि घरानों का प्रचलन रहा उसी में से एक मैहर घराना जो अपने वादन शैली के लिए अत्यधिक प्रचलित माना जाता है मैहर करने का नामकरण मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित मैहर जहां पर स्वयं विद्या की देवी मां शारदा विराजमान हैं, मां शारदा का मंदिर अनेक पर्वतों से एक पर्वत के शिखर पर स्थित है यहां पर पूरे वर्ष दर्शनार्थियों की भीड़ लगी होती है ,इस घराने के संस्थापक बाबा अलाउद्दीन खान रहते थे जिन्होंने मैहर महाराज ठाकुर ब्रजनाथ सिंह जूदेव जी के आग्रह पर मैहर आकर उन्हें संगीत की शिक्षा दी अपितु यहां पर मैहर में रहकर संगीत के महान साधकों को संगीत की शिक्षा देकर इस घराने का नाम रोशन किया। मैहर घराने की नींव लगभग १९१८ मैं बाबा अलाउद्दीन खाँ ने रखा।

1 मैहर घराने के अलाउद्दीन ख़ां की वंश परंपरा:-"3

2 मैहर घराने कलाकारों की सूची:-"4

1. मैहर घराने की वंशावली:

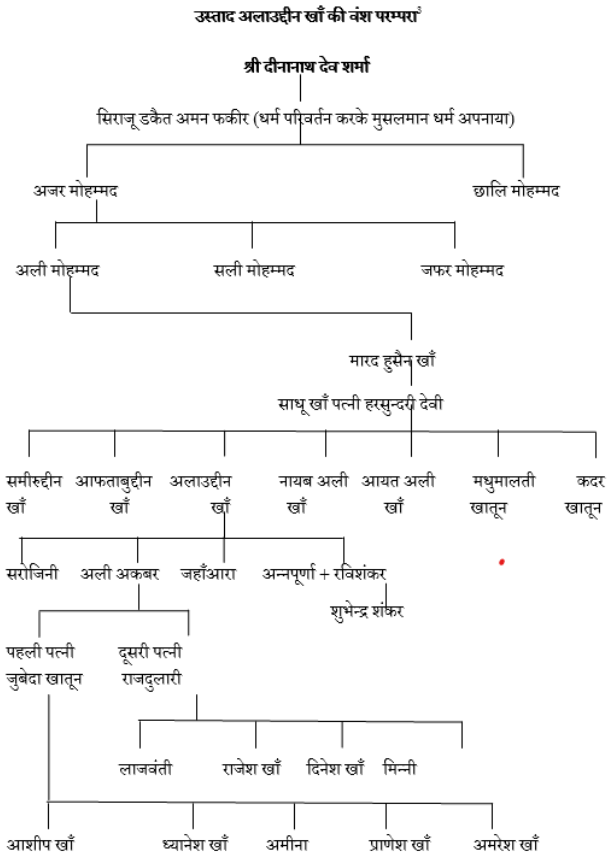

2. मैहर घराने के कलाकारों की सूची[1]

उस्ताद अलाउद्दीन खां के शिष्य

उस्ताद अलाउद्दीन खां साहब	सरोद वादक
श्रीमती अन्नपूर्णा देवी (उ. अलाउद्दीन खां की पुत्री)	सितार एवं सुरबहार
पं० रविशंकर	सितार
मैहर महाराजा ठाकुर बृजनाथ सिंह जूदेव	सितार
पं० निखिल बैनर्जी	सितार
पं० ज्योति भट्टाचार्य	सरोद
श्री अजय सिंह राव	सितार
पं० तिमिरवरण भट्टाचार्य	सितार

उस्ताद अलीअकबर खां साहब के शिष्य

उस्ताद आशीष खां साहब	सरोद
उस्ताद ध्यानेश खां	सरोद
पं० नलिन मजूमदार	गिटार
पं० ब्रजभूषण काबरा	गिटार

1 मैहर घराने के कलाकारों की सूची

श्रीमती शरन रानी	सरोद
श्री सुप्रभात पाल	सरोद
श्री मोरमुकुट केडिया	सितार

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी के शिष्य

पं० निखिल बैनर्जी	सितार
पं० इन्द्रनील भट्टाचार्या	सितार
पं० कार्तिक कुमार	सितार, सुरबहार
पं० बसंत लाल काबरा	सरोद
श्री अमिताभ भट्टाचार्या	सरोद
पं० हरि प्रसाद चौरसिया	बांसुरी

पं० रविशंकर जी के शिष्य

पं० उमाशंकर मिश्र	सितार
पं० शशिमोहन भट्ट	सितार
श्रीमती जया विश्वास	सितार
पं० कार्तिक कुमार	सितार, सुरबहार
पं० गोपाल कृष्ण	विचित्र वीणा
श्री सतीश श्रीवास्तव	सितार
श्री शुभेन्द्र राव	सितार
पं० सत्यदेव पवार	वायोलिन
पं० वरूण पाल	गिटार

3. मैहर घराने के वादन शैली

किसी भी घराने की पहचान उस घराने की वादन शैली के द्वारा होती है। फिर वह नृत्य हो, वादन हो, अथवा गायन हो हर एक घराने के कलाकार अपने विशिष्ट प्रतिभा के आधार पर उस घराने में नवीन शैली का विकास करते हैं मैहर घराने की पहचान यहां की वादन शैली नवीन राग एवं वाद्य के विकास पर आधारित है। मैहर घराने के वादन शैली को विकसित करने वाले कलाकारों में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब, अली अकबर खाँ, उस्ताद आशीष खाँ, पं० रवि शंकर , श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, निखिल बनर्जी, पन्नालाल घोष,हरिप्रसाद चौरसिया इत्यादि दिग्गज कलाकारों की वादन शैली एवं रचनात्मक व्यक्तित्व के कारण इस घराने की वादन शैली विशिष्ट मानी जाती है। इस घराने की सबसे प्रमुख विशेषता यह रही कि यहां के कलाकार ने अनेक वादय यंत्रों के वादन को सफलतापूर्वक कायम किया चाहे वह सितार हो, सरोद हो ,और सुरबहार,गिटार या सुषिर वाद्य में बांसुरी हो ,गज से बजने वाला वाद्य वायलिन हो ,या चंद्र सारंग, घन वाद्य में जल तरंग हो सभी वाद्य पर नवीन एवं विशिष्ट शैली का सफलता पूर्वक वादन किया ।इसका श्रेय बाबा अलाउद्दीन खाँ जो मैहर के संस्थापक एवं दिक्कत कलाकारों के जन्मदाता माने जाते हैं।

(क).सरोद की वादन शैली

उस्ताद अलाउद्दीन खां अपने कठिन परिश्रम एवं अपने रचनात्मक क्षमता से इस वाद्य की वादन शैली को समृद्ध किया, बाबा ने अनेको वाद्य कई गुरुओं के शरण में रह कर सीखा। जिसमें सुर-सिंगर ,सुरबहार, वायलिन, तबला, पखावर, शहनाई इत्यादि वाद्य सम्मिलित था । प्रसिद्ध बीनकार वज़ीर खाँ साहब से उन्होंने सरोद और सुर सिंगार पर बीन अंग की पूर्ण शिक्षा ग्रहण की थी। यही नहीं बाबा अलाउद्दीन खाँ को वीणा वादन की पूर्ण तकनीक का भी ज्ञान था। उपयुक्त अनेक वाद्य की विशेषताओं को एवं अपने गायन वादन की विधि अनुभव को उन्होंने

सरोद में डाल दिया एवं सरोद वादन की प्रचलित सीमित परंपराओं का विस्तार उन्होंने किया। उन्होंने रवाब और बीन वादन की सभी विशेषताओं को अपने सरोद में अपनाया फलस्वरुप उनके बाज में आलाप, जोड़ालाप, झाला,विलंबित गत, मध्यगत, द्रुतगत, लड़लपेट, कतर ,तारपरन, झाला ठोंक , क्रमबद्ध बाबा अलाउद्दीन खां की देन थी। बाबा ने सर्वप्रथम दा रा दा रा के बोल प्रयुक्त किया से पूर्व सरोद में दिर,दिर का बोल अधिक प्रयुक्त होता था। सरोज पर जमजमा कीर्तन आदि की बारीकियों का प्रचार- प्रसार का श्रेय भी बाबा अलाउद्दीन ख़ां को ही जाता है जो कि पर्दे पर एक आघात में स्वर काटकर बजाई जाती है। जबकि सरोद पर पर्दे नहीं होते हैं, इसलिए उसमें यह बजाना कठिन होता है बाबा ने इन को बारीकियों को सरोद पर बहुत ज्यादा अपनाया जिससे इसका विकास चरम सीमा पर पहुंचा।

(ख). वॉयलिन की वादन शैली

भारतीय शास्त्रीय संगीत के उन्नायाक बाबा अलाउद्दीन खां जिनको शास्त्रीय संगीत में वॉयलिन लाने का श्रेय दिया जाता है,इन्होंने कोलकाता के प्रसिद्ध पाश्चात्य वॉयलिन वादक मास्टर लोवो से वॉयलिन की शिक्षा ग्रहण की, मास्टर लोवो पाश्चात्य संगीत के वॉयलिन की तकनीक को सीख एवं अपने प्रथम गुरु जो नूलो गोपाल से गायन की शिक्षा लगभग 7- 8 वर्षों में ग्रहण कर ,उन्होंने अपने गुरु नूलो गोपाल से अनेक अलंकार, पलटों को सीखा एवं उसको वॉयलिन पर उतारा, धीरे-धीरे इन्होंने वॉयलिन पर गत- तोड़े आदि बजाना शुरू किया। इन्होंने वॉयलिन की शिक्षा कोलकाता के अहमद अली खान से भी प्राप्त की।

1924 में लखनऊ संगीत सम्मेलन में अलाउद्दीन खां साहब को सर्वोच्च वॉयलिन वादक का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। बाबा अलाउद्दीन ख़ां ने इस पर शास्त्रीय संगीत बजाना प्रारंभ किया। इस वाद्य पर उन्होंने आलाप, जोड़ा-आलाप, झाला विलंबित गत, तान, तोड़ा, लड़ी ,लड़गुथाव, लड़- लपेट ,कतर ,तारपरन, झाला, ठोंक झाला ,आदि बजाये। वॉयलिन वादकों में उनके दो शिष्य कोलकाता के श्री रॉबिन घोष एवं जयपुर आकाशवाणी केसरी सत्यनारायण शर्मा का नाम उल्लेखनीय है"[1] बाबा अल्लाउद्दीन ख़ां सितार सरोद वॉयलिन जैसी वादन परंपरा में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना रखा था।

(ग). सितार की वादन शैली

सितार एक ऐसा वाद्य है जिसको अलाउद्दीन ख़ां साहब ने कभी अन्य वाधयो की तरह नहीं बजाया, यद्यपि व्यक्तिगत रूप से इन्होंने रामपुर में ख़ां साहब के तत्कालीन प्रसिद्ध सितारिये श्री कल्लू खाँ व श्री नासिर अली ख़ां से शिक्षा ग्रहण की थी जिनके आशीर्वाद स्वरूप इन्होंने कई महान कलाकार निर्मित किये।प० रविशंकर, श्री निखिल बनर्जी, श्री इंद्र नील भट्टाचार्य इत्यादि"[2] पंडित रविशंकर सदैव ही बींन अंग से प्रभावित रहे इसी कारण व उन्होंने सर्वप्रथम वीणा वादन के धुपद अंगीय आलाप को अपनी सितार पर वादन प्रारंभ किया इसमें उन्होंने वीणा के सभी क्लिष्ट अंगों को आत्मसात किया। एवं इसी माध्यम से उन्होंने इनायत खाँ के समय चले आ रही उस प्रथा को समाप्त किया ।उसे परिवर्तित स्वरूप दिया लरज-खरज व दूसरे तुम्बे का प्रयोग किया,यह परिवर्तन उनके गहन चिंतनशीलता का प्रमाणित उदाहरण रहा। क्योंकि इसके पूर्व किसी भी सितार वादक ने ऐसा प्रचार नहीं किया।

पंडित जी के वादन की एक मुख्य विशेषता जोड़ आलाप था। उनका जोड़ा- आलाप एकदम अलग मंत्र -मुग्ध करने वाला था उनके वादन में जमजमा, मींड़ घसीट, कृन्तन,कण, मुर्की का प्रयोग करके अलग ही भव्यता प्रदान की।प० रवि शंकर ने अपने सितार में खुली जवारी का प्रयोग किया, जिसे सितार में लगे सभी तारों की आवाज स्पष्ट रूप से सुनाई दे सके। पंडित रवि शंकर दुत तानें व तोड़े बजाते समय लरज-खरज के तारों की अनचाही झंकार अधिक ना हो इसके लिए पंडित जी ने सितार में दो हुक लगवाएं जिसमें वे दुत तानों आदि को बजाते समय लरज-खरज के तारों को फंसा दिया करते थे।इस प्रयोग से पंडित जी को वादन में बहुत सुविधा प्राप्त होने लगी। रवि शंकर के सितार की नक्काशी सैल्यूसाइड की सहायता से हुई। पंडित जी के सितारों में तारों की संख्या ७ थी।

1 मैहर घराने की वादन शैली

2 मैहर घराने की वादन शैली

तार	सुर	धातु	गेज
1	म	स्टील	30
2	ग़ा	पीतल	27
3	प़	पीतल	25
4	ग़ा	पीतल	21
5	प	स्टील	32
6	सा	स्टील	33
7	सां	स्टील	34

तरब की -१३ तारे- स्टील -३४ नं०"1

(घ). शास्त्रीय गिटार वादन की शैली

हवाइयां गिटार पर शास्त्रीय संगीत की शुरुआत सर्वप्रथम मैहर घराने के कलाकारों द्वारा ही किया गया। मैहर घराने के कलाकारों ने इस पाश्चात्य संगीत के वाद्य पर भारतीय संगीत को अपनी सफल प्रयोगात्मकता को काफी ऊंचाइयों तक पहुंचा गिटार वाद्य की कलाकार स्व० पंडित नलिन मजूमदार जी, जोधपुर के ब्रजभूषण काबरा जी का नाम उल्लेखनीय है। जिसका दिशा निर्देशन स्वयं बाबा अलाउद्दीन खान एवं अलीअकबर खान जी द्वारा किया गया। हवाइयां गिटार की वादन तकनीकी उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्य विचित्र वीणा एवं दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्य घोटू वाधम् माध्यम से काफी मिलती-जुलती है। इन दोनों वाधयो के तार स्टील या लोहे की छोटी छड़ (स्टील बार)या कांच के गोल को घसीट कर स्वर या मींड गमक इत्यादि बजाए जाते हैं।

इस वाद्य पर उन्होंने आलाप ,जोड़ा-आलाप, झाला विलंबित गत, तान, तोड़ा, लड़ी, लड़गुथाव, लड़-लपेट, कतर, तारपरन, झाला, ठोंक झाला ,आदि बजाये, वर्तमान समय में हवाएं गिटार वादक पंडित ब्रजभूषण काबरा (जोधपुर), पंडित विश्व मोहन भट्ट (जयपुर) देवाशीष भट्टाचार्य (कोलकाता) देवाशीष चक्रवर्ती (कोलकाता) डॉक्टर शिवनाथ भट्टाचार्य (वाराणसी) पंडित वरुण पाल (कोलकाता) डॉ कमला शंकर (वाराणसी) इत्यादि कलाकार इस नवीन वाद्य का प्रयोग कर रहे हैं। कुछ कलाकारों ने इस वाद्य में प्रयोगो के आधार पर परिवर्तन कर इसे नवीन नाम दिया जैसे मोहन वीणा ,विश्व वीणा, सात्विक वीणा ,हंसवीर वीणा, शंकर गिटार इत्यादि ।"[2]

मैहर घराने के द्वारा रचित कुछ रागों के नाम

(क).बाबा अलाउद्दीन ख़ां द्वारा रचित राग:हेम बिहाग, हेमंत, माँझ-खमाज, मदन -मंजरी,प्रभा- कली,शोभावती, दुर्गेश्वरी,धवलेश्वरी, भुवनेश्वरी, केदार -माँझ, मुहम्मद, चंडिका, कौशीभैरव,

(ख). रवि शंकर जी द्वारा रचित रागो का विवरण: कौशिक तोड़ी, राज कल्याणी, लूम, सैलांनी, पंचम से गारा, सुरंजनी,गंगेश्वरी,नटभैरव, जोगेश्वरी, बैरागी तोड़ी, मोनकौंस, जनसम्मोहनी, रंगेश्वरी, तिलक श्याम, परमेश्वरी,कामेश्वरी, मनमंजनी, चारुकेशी ,पलाश- काफी, अहीर ललित, इत्यादि

(ग). प० पन्नालाल घोष: दीपावली, पुरिया कल्याण

(घ). उस्ताद बहादुर अली खाँ साहब : शुभ्रा , प्रभात रंजनी, उमावती,रूपावती ,ललित कौंस ,हिंडोली ललित, इत्यादि

1 मैहर घराने की वादन शैली

2 मैहर घराने की वादन शैली

ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

मैहर घराने के कलाकारों द्वारा रचित स्वरलिपि[1]

मात्रा	-	‿	रदा	-	। तथा 0 ।
ठहराव	-	—	चिकारी	-	<
तारसप्तक	-	सां	अल्पविराम	-	;
मध्यसप्तक	-	सा	क्रिन्तन	-	⊓
मन्द्रसप्तक	-	सा̣	जमजमा	-	⋁⋀
अतिमन्द्रसप्तक	-	सा̤	मीड़ और सूत	-	⌒
कोमल स्वर	-	<u>रे</u> <u>गा</u> <u>धा</u> <u>नि</u>	गमक	-	∿∿
तीव्र स्वर	-	मं॑	सम	-	×
दा	-	।	खाली	-	0
रा	-	-और 0	ताली	-	2, 3, 4...
दिर	-	V			

मैहर का वृन्दंवादक की सूची:-

मैहर घराने का वाद्य वृंद का प्रथम प्रदर्शन सन् 1924 में लखनऊ के "केसरबाग" में हुआ था। जिसमें सभी बाल कलाकारों ने भाग लिया, जिसकी उम्र 8 से 16 वर्ष के मध्य थी। इस कार्यक्रम में राग "इमन कल्याण" की प्रस्तुति दी गई जो तीनताल पर आधारित था।

१) मैहर घराने के वाध वृंद के कलाकार प्रथम वादक दल समूह जिसमें 15 कलाकार थे , जिनकी सूची इस प्रकार है:-"[2]

1. श्री अनार खाँ	सितार वादक
2. श्री रामस्वरूप	सितार बैंजोवादक
3. श्री विश्वनाथ	वॉयलिन वादक
4. श्री बैजनाथ	वॉयलिन वादक
5. श्री शिव सहाय	बाँसुरी व क्लोरेनेट वादक
6. श्री चिनबुद्धि महाराज	इसराज वादक
7. श्री बिन्दे महाराज	दिलरूबा वादक
8. श्री सुखदेव	सारंगा वादक
9. श्री झुर्रेलाल जी	नलतरंग, जलतरंग वादक
10. श्री जगन्नाथ	बाँसुरी वादक
11. श्री सटकू महाराज	तबला वादक

1 मैहर घराने की स्वरलिपि

2 मैहर घराने के वृंदवादन की सूची

12. श्री दशरथ जी — सितार बैंजो वादक व गायक

13. मुन्नी बाई — गायिका

14. खतेरन बाई — पियानोवादिका

15. हफीजन बाई — हारमोनियम वादिका

२) दूसरे वादक डाल समूह जिसमें आठ वादक और आए इस प्रकार कुल 23 कलाकार हो गए हैं इन आठ कलाकारों की सूची इस प्रकार है:-

16. पं. गिरधारीलाल — गायक, हारमोनियम वादक

17. श्री तनसुखराम — हारमोनियम वादक व गायक

18. श्री हीरामन — हारमोनियम वादक व गायक

19. श्री रामभरोसे — सारंगा वादक

20. उर्मिला जी — चेलो वादिका

21. श्री मूलचन्द सिंह — इसराज वादक

22. श्री लच्छीराम जी (सूरदास) — तबला वादक

23. श्री जमुनाप्रसाद (गुलगुल महाराज) — गायक व हारमोनियम वादक

सन् १९७९ में मैहर के भूतपूर्व महाराज की सुपुत्र एवं विधायक श्री नारायण सिंह जी के प्रयासों से मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 6 नए कलाकारों की नियुक्ति मैहर वाधवृन्द में की गई। पुराने नलतरंग वादक श्री झुर्रे ख़ाँ को पुनः १ वर्ष के लिए गया हारमोनियम वादक श्री गिरधर महाराज वह श्री झुर्रे ख़ाँ एवं शैलेंद्र शर्मा मिलकर नए कलाकारों को खां साहब की रचना का प्रशिक्षण दिया ,और अब तक लगभग 40 रचनाएं तैयार हो चुकी है। यह वाध वृन्द विभिन्न संगीत समारोह में भाग ले रहा है इसमें कार्यक्रम कलाकार की सूची इस प्रकार है -

१. श्री झुर्रा खां (नल तरंगवादक)

२. श्री गिरधर महाराज (हारमोनियम वादक)

३. श्री सुनील कुमार शुक्ला (हारमोनियम वादक)

४. श्री रामलखन पाण्डेय (सितार वादक)

५. श्री रामायण प्रसाद चतुर्वेदी (सितारवादक)

६. श्री शैलेन्द्र शर्मा (सरोदवादक)

७. श्री रामलखन शर्मा (सरोदवादक)

८. श्री प्रकाश (वायलिन वादक)

९.श्री गुनाकर श्यामले (बांसुरी वादक)

१०. श्री अशोक कुमार बड़ोलिया (तबला वादक)

११. श्री रविन्द्र दामोदर (तबला वादक)

१२. श्री गोकरण प्रसाद पाण्डेय (चैलो वादक)

१३. श्री सुरेश कुमार चतुर्वेदी (इसराज वादक)

१४. श्री विजय देव सिंह (सितार बैंजो वादक)

१५. श्री रामसुमन चौरसिया (सितार बैंजो वादक)

१६. श्री प्रहलाद प्रसाद मिश्रा (सितार बैंजो वादक)

१७. श्री मूलचन्द्र (इसराज वादक)

१८. श्री सम्पत कुमार पाण्डेय (इसराज वादक)

१९. श्री विजय कुमार शर्मा (वायलिन वादक)

निष्कर्ष

मैहर घराना जो कि अपने संगीत के लिए उत्कृष्ट घराना माना जाता है। मैहर घराना अपने वादन शैली से परिपूर्ण एवं भारत रत्न कलाकारों एवं विभिन्न प्रकार के विभूषण, पद्म विभूषण ,पद्मश्री से अलंकृत कलाकारों का एक प्रतिभाशाली घराना है, इसके संस्थापक बाबा अलाउद्दीन ख़ां साहब जिनके द्वारा अनेको नवीन वाध- नल तरंग ,चंद्र सारंग, सारंगी ,सितार बैंजो ,वायलिन, सितार ,सितार बैंजो, गिटार ,सुरबहार ,सरोद , बांसुरी, इत्यादि वाद्य का निर्माणक माना जाता है। अनेक रागों की रचना बाबा एवं उनके शिष्य गणों द्वारा किया गया, जो अतुलनीय सराहनीय है जिनका आज वर्तमान में अनुसरण किया जा रहा है इस घराने का प्रचार प्रसार आज भी इस घराने के शिष्य करें कर रहे हैं।

सन्दर्भ

1. वर्मा, डॉ०संजय कुमार,मैहर घराने की संगीत परंपरा, हिंदी ग्रंथ ,वाराणसी कला प्रकाशन २०१५ पृष्ठ संख्या-१५
2. वही, १७
3. जैन ,डॉ०प्रभाव, भारतीय संगीत के उन्नायन उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ, उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत अकादमी भोपाल मध्य प्रदेश २००१, पृष्ठ संख्या-७
4. वर्मा, डॉ०संजय कुमार,मैहर घराने की संगीत परंपरा, हिंदी ग्रंथ ,वाराणसी कला प्रकाशन २०१५ पृष्ठ संख्या२७,२८,२९,,३०
5. जैन ,डॉ०प्रभाव, भारतीय संगीत के उन्नायन उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ, उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत अकादमी भोपाल मध्य प्रदेश २००१, पृष्ठ संख्या-८९, ९१
6. वही, पृष्ठ संख्या-८७
7. श्रीवास्तव प्रीति, 20वीं शताब्दी के सितार वादकों की वादन शैली एवं परंपरा, आकांक्षा पब्लिकेशन हाउस २०१७, पृष्ठ संख्या -८३,८९,७०
8. वर्मा, डॉ०संजय कुमार,मैहर घराने की संगीत परंपरा, हिंदी ग्रंथ ,वाराणसी कला प्रकाशन २०१५ पृष्ठ संख्या३८
9. वही, पृष्ठ संख्या ३३,३४
10. जैन ,डॉ०प्रभाव, भारतीय संगीत के उन्नायन उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ, उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत अकादमी भोपाल मध्य प्रदेश २००१, पृष्ठसंख्या-१२३,१२८,१२९,१३०